अनाकृष्टस्य विषयैर्विद्यानां पारदृश्वनः ।

तस्य धर्मरतेरासीद् वृद्धत्वं जरसा विना ।।23।।

अन्वयः: विषयैः अनाकृष्टस्यं विद्यानां पारदृश्वनः धर्मरतेः तस्य जरसा विना वृद्धत्वम् आसीत्।

अनुवादः- सांसारिक विषय भोगों के प्रति आकृष्ट न होने वाले, (वेदागदि) विद्याओं के पारंगत तथा धर्म में अनुराग रखने वाले राजा दिलीप उम्र के वृद्ध न होने पर भी (अर्थात् युवावस्था में ही) बिना वृद्धावस्था (बुढ़ापे) के ही (ज्ञान के कारण) वृद्ध थे।

टिप्पणियां

अनाकृष्टस्य न आकृष्टस्य (नञ् उपसर्ग आ धातु कृष् क्त)। जो (दिलीप) विषयों से (विषयैः) अनाकृष्ट थे। इसका अर्थ है कि यद्यपि वह आयु में वृद्ध नहीं थे, फिर भी वैराग्य (अनासक्ति) में वृद्ध था।

पारदृश्वनः पारः धातु दृश् क्वनिप्। पार-दृष्टवान् इति पारदृश्वा तस्य (उपपद तत्पुरुष)। पार अर्थात् अन्त तक को देख लेने वाला, पारंगत, पूर्ण ज्ञाता। दूरदृष्टि वाले।

विद्यानाम् विद्याओं का। विद्याएं चार मानी गई हैं: आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीतिश्च शाश्वती। विद्याश्चैताश्चतस्रस्तु लोकसंस्थितिहेतवः।।

विद्याएं चौदह भी मानी गई हैं:

षडगमिश्रिताः वेदाः धर्मशास्त्रं पुराणकम्।

मीमांसा तर्कमपि च एता विद्याः चतुर्दश।।

वेदांग छः हैं: शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष।

धर्मरतेः धर्मे रतिः यस्यः सः धर्मरतिः (बहुव्रीहि), तस्य। वह जिसकी धर्म में निष्ठा है। दिलीप का विशेषण।

जरसा विना– वृद्धत्व के विना। दिलीप आयुवृद्ध नहीं अपितु वैराग्यवृद्ध, विद्यावृद्ध, ज्ञानवृद्ध तथा धर्मवृद्ध थे।